आज का पुरुषार्थ 9 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – "मैं दुसरों के विघ्न को नष्ट करने वाली विघ्न विनाशक आत्मा हूँ... इन **स्वमान** से आज स्वयं को परिपूर्ण मेहसूस "

बाबा ने हमें वरदान दिया है ...

" बच्चे तुम विघ्न विनाशक हो "

हम इस वरदान को स्वीकार कर ले। बाबा ने कहा है ...

" आगे चलकर संसार में विघ्नों के पहाड़ गिरेंगे .. तुम्हें सारे संसार के विघ्नों को हरना होगा "

तुम पहचानों अपनी शक्तियों को .. याद करो .. परम सदगुरू से मिले हुए वरदानों को ..

" तुम साधारण नहीं हो .. बहुत महान हो "

हमें दुसरों के विघ्नों को नष्ट करना है। दुसरों के लिए विघ्न विनाशक वही बन सकते है .. जो लम्बे काल निर्विघ्न जीवन जीते है।

क्योंकि विघ्न में आत्मा की शक्ति बहुत नष्ट होती है। विघ्नों की उलझन, विघ्नों में चलने वाले बहुत सारे संकल्प, परेशानियाँ आत्मा को निर्वल करती है।

और जब हमारा जीवन लम्बा काल निर्विघ्न रहता है तो वे शक्तियाँ हमारी जमा होती रहती है। और तब ही हम अपने लिए या दुसरों के लिए विघ्न विनाशक बन सकते है।

तो हम ऐसा जीवन जियें जिसमें विघ्न कम से कम हो।

विघ्न उनको नहीं आते जो सरल चित्त है। भगवानुवाच है ...

" तुम यदि सरल होंगे तो तुम्हारे विघ्न और समस्यायें भी सरल हो जायेंगी "

विघ्न और समस्यायें उन्हें नहीं आते ... जो ' **मास्टर सर्वशक्तिमान बनकर रहते है** "

... क्योंकि शक्तियों की किरणों से विघ्न स्वतः ही नष्ट हो जाते है।

विघ्न और समस्यायें उन्हें भी नहीं घिरती ... जो ' स्वराज्य अधिकारी बनते है '

हम सरल चित्त बने, बहुत **शक्तिशाली** बने तो **विघ्नों से मुक्त जीवन** का आनन्द ले सकेंगे।

विघ्न उन्हें भी आते है ... जो ' अहंकार और क्रोध में ज्यादा रहते है '

जो इस माया के अधीन है, वह विघ्न के भी अधीन हो जाते है।

हमें अपने जीवन को **निर्विकारी** बनाकर इन विघ्नों से मुक्त जीवन जीना है।

जिसके मन में संकल्पों के तूफान नहीं उठते .. उनका जीवन **निर्विघ्न** रहता है।

हम अपने अंदर **ज्ञान का बल, स्वमान का बल** इतना अच्छा बढ़ाये कि

व्यर्थ संकल्पों के तूफानों से हम मुक्त रहे।

क्योंकि संसार में व्यर्थ संकल्पों की तो मानो सुनामी चल रही है। हर व्यक्ति का मन व्यर्थ संकल्पों के तूफानों से ग्रस्त है। इसलिए शक्तियाँ बहुत नष्ट हो रही है।

... तो विघ्न आने पर मनुष्य अपने को कमजोर पाता है। ऐसी बीमारियां आती है, ऐसी बातें सामने आती है जो कभी सोची भी नहीं थी।

तो हम **श्रेष्ठ संकल्पों** से स्वयं का श्रृंगार करे। और लक्ष्य बना ले की हमें तो सभी को विघ्नों से मुक्त करना है।

दृष्टि देकर, **वायब्रेशन्स** देकर, **संकल्प** देकर ... यह काम हम प्रारंभ करें।

और रोज़ सवेरे इस स्वमान का अभ्यास किया करे कि ...

हम सूक्ष्म लोक में गये .. और बाबा ने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया .. दृष्टि देते हुए अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रखकर वरदान दिया ..

" बच्चे, विघ्न विनाशक भव "

... और हम स्वीकार कर ले कि बाबा से हमें यह वरदान मिल गया है।

सारा दिन इसके नशें में रहें .. इसकी **स्मृति** में रहे ..

यह वरदान बुद्धि में धारण हो जायेगा। और फिर इसका प्रयोग करते रहे तो अनुभव होते रहेंगे कि ... सचमुच हमारे पास यह शक्तियाँ आ गई है।

तो आज सारा दिन इस स्वमान में रहेंगे ...

" मैं विघ्नविनाशक हूँ "

और ..

" बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org